द्वारा प्रकाशित
महेन्द्र प्रकाश प्राइवेट लिमिटेड
ई – 42, 43, 44, सेक्टर–7, नोएडा–201301,
उत्तर प्रदेश, भारत.

सर्वाधिकार सुरक्षित,
प्रथम संस्करण, जनवरी 2017

आई.एस.बी.एन. 978-81-934349-8-8
भारत में मुद्रित –

कॉपीराइट © 2017
जेम एंड ज्वैलरी स्किल काउंसिल ऑफ इंडिया,
बिजनेस फैसिलिटेशन सेंटर, तृतीय तलए
एसईईपीजेड स्पेशल इकोनॉमिक जोन,
अंधेरी (पूर्व), मुंबई 400096
फोनः 022-28293940 / 41/42
ईमेलः info@gjsci.org
वेबसाईटः www.gjsci.org

डिस्क्लेमर

इस पुस्तिका में शामिल जानकारी जेम एंड ज्वैलरी स्किल काउंसिल ऑफ इंडिया के विश्वसनीय स्रोतों से प्राप्त की गई है। जेम एंड ज्वैलरी स्किल काउंसिल ऑफ इंडिया उक्त जानकारी की सटीकता, पूर्णता या पर्याप्तता से जुड़ी सभी वारंटी को नामंजूर करता है। इसमें शामिल किसी भी जानकारी, या उसकी व्याख्या में किसी भी प्रकार की त्रुटि, चूक या अपर्याप्तता के लिए जेम एंड ज्वैलरी स्किल काउंसिल ऑफ इंडिया की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। इस पुस्तक में शामिल कॉपीराइट सामग्री के स्वामियों का पता लगाने के लिए यथासंभव प्रयास किए गए हैं। प्रकाशक इस पुस्तक के भावी संस्करणों में सुधार करने के लिए मालिकों में लाई गई किसी भी चूक के लिए आभारी होगा। जेम एंड ज्वैलरी स्किल काउंसिल ऑफ इंडिया का कोई भी अधिकारी इस सामग्री पर भरोसा करने वाले किसी भी व्यक्ति को होने वाले किसी भी नुकसान के लिए जिम्मेदार नहीं होगा। इस प्रकाशन में दी गई सामग्री कॉपीराइट के अधीन है। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को जेम एंड ज्वैलरी स्किल काउंसिल ऑफ इंडिया द्वारा अधिकृत किए गए बिना, किसी भी रूप्या किसी भी साधन में, चाहे वह कागज पर हो या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर, पुनरुत्पादित, संग्रह या वितरित नहीं किया जा सकता है।

"कौशल से बेहतर भारत का निर्माण होता है।
यदि हमे भारत को विकास की ओर ले जाना है तो
कौशल का विकास हमारा मिशन होना चाहिए।"

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री, भारत सरकार

Skill India
कौशल भारत-कुशल भारत

GJSCI
Gem & Jewellery Skill Council of India

N·S·D·C
National
Skill Development
Corporation
Transforming the skill landscape

Certificate

COMPLIANCE TO
QUALIFICATION PACK – NATIONAL OCCUPATIONAL STANDARDS

is hereby issued by the

GEM & JEWELLERY SECTOR SKILL COUCIL

for

SKILLING CONTENT : PARTICIPANT HANDBOOK

Complying to National Occupational Standards of
Job Role / Qualification Pack: **'Jewellery Retail Sales Associate'**
QP No. **'G&J/Q6802 NSQF Level 4'**

Date of Issuance: Jan 20th,2017
Valid up to*: Jan 19th,2020

*Valid up to the next review date of the Qualification Pack or the 'Valid up to' date mentioned above (whichever is earlier)

Authorised Signatory
(Gem & Jewellery Skill Council of India)

स्वीकृतियां

इस प्रतिभागी पुस्तिका के निर्माण हेतु जीजेएससीआई कृति सिन्हा और माधुरी प्रभुलकर को धन्यवाद देना चाहेगा। हम इस अवसर का लाभ उठाते हुए दिल्ली जेमोलोजिकल लैबोरेटरी (डीजीएल) को और श्री आशीष कालरा (डिपार्टमेंट प्रमुख, डीजीएल) को भी इस पुस्तक में उनके मूल्यवान आदानों के लिए धन्यवाद देना चाहेंगे। हम फाइन ज्वैलरी को उनकी प्रतिपुष्टि और टिप्सों के लिए धन्यवाद देना चाहेंगे। हम शिक्षा और कौशल की गुणवत्ता को बनाए रखने के अंतहीन प्रयासों के लिए विषय–वस्तु विशषज्ञों की सराहना करते हैं। हम उनका संपूर्ण भारत के जेम एंड ज्वैलरी सेक्टर के छात्रों को प्रेरित करने और उन्हें सुविधा प्रदान करने के लिए निष्ठापूर्वक धन्यवाद करते हैं।

भवदीय,

प्रेम कुमार कोठारी
चेअरमेन, जीजेएससीआई

इस पुस्तक के बारे में

यह प्रतिभागी पुस्तिका विशेष क्वालिफिकेशन पैक (क्यूपी) हेतु प्रशिक्षण सक्षम करने के लिए बनाई गई है। प्रत्येक राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक (एनओएस) को यूनिट में शामिल किया गया है।
विशेष एनओएस हेतु मुख्य सीख उद्देश्य उस एनओएस के लिए यूनिट की शुरुआत को चिन्हित करते हैं।
इस पुस्तिका में इस्तेमाल हुए प्रतीकों को नीचे वर्णित किया गया है।

- यह पुस्तिका ज्वैलरी रिटेल सेल्स एसोसिएट के मूलभूत बिक्री स्तर का विस्तृत वर्णन प्रदान करती है।
- यह पुस्तिका ज्वैलरी रिटेल सेल्स एसोसिएट को रिटेल काउंटर पर होने वाली कार्यप्रणालियों से परिचित कराती है।
- इस पुस्तिका में दी गई विस्तृत उत्पाद जानकारी से ज्वैलरी रिटेल सेल्स एसोसिएट को उस उत्पाद को समझने में मदद मिलेगी जिसे वह बेच रहा है।
- प्रतिभागी, काउंटर पर कीमती स्टॉक को बनाए रखने के महत्वपूर्ण पहलूओं को समझ पाएंगे।
- यह पुस्तिका ज्वैलरी रिटेल सेल्स एसोसिएट को यह भी सिखाएगी कि दूसरे विभागों के साथ तालमेल बनाए रखना महत्वपूर्ण है और कार्य क्षेत्र को किस प्रकार से साफ और सुरक्षित रखना है।

प्रयोग किये गये चिन्ह्

प्रमुख शिक्षा परिणाम

स्टेप्स

टिप्स

टिप्पणियाँ

यूनिट के उद्देश्य

विषय–सूचि

क्रमांक	मोड्यूल और यूनिट्स	पृष्ठ सं.
1.	परिचय	1
	यूनिट 1.1 – भारतीय आभूषणों का इतिहास	3
	यूनिट 1.2 – भारत के आभूषण उद्योग का अवलोकन	5
	यूनिट 1.3 – ज्वैलरी रिटेल सेल्स एसोसिएट (जेआरएसए) की भूमिका और दायित्व	16
2.	ग्राहकों को रिटेल काउंटर पर व्यस्त रखना (G&J/N6801)	19
	यूनिट 2.1 – ग्राहक के साथ बातचीत करना	21
	यूनिट 2.2 – ग्राहक की जरूरतों को समझना	26
	यूनिट 2.3 – शिकायत निपटाने की गतिविधि	32
3.	ग्राहक को आभूषण उत्पाद पेशकशों के बारे में विस्तार से बताना (G&J/N6802)	35
	यूनिट 3.1 – सोना	37
	यूनिट 3.2 – प्लैटिनम	41
	यूनिट 3.3 – चांदी	42
	यूनिट 3.4 – हीरा	43
	यूनिट 3.5 – कीमती रत्न	48
	यूनिट 3.6 – अर्ध कीमती रत्न	51
	यूनिट 3.7 – नकली, सिंथेटिक और सिम्युलैंट	54
	यूनिट 3.8 – रत्न–उनकी कटाई/उनके प्रकार	55
	यूनिट 3.9 – मोती	57
	यूनिट 3.10 – हाथ से बने आभूषण	60
	यूनिट 3.11 – रत्न की सेटिंग	65
	यूनिट 3.12 – मशीन से बने आभूषण	67
	यूनिट 3.13 – परिसज्जन	76
	यूनिट 3.14 – भारतीय आभूषणों में विविधता	77
4.	विभिन्न काउंटरों पर ग्राहक के द्वारा खरीदने के निर्णय को सहज करना (G&J/N6803)	87
	यूनिट 4.1 – काउंटर पर ग्राहक की मदद करना	89
	यूनिट 4.2 – बिलिंग प्रक्रिया को सहज करना	94

विषय–सूचि

क्रमांक	मोड्यूल और यूनिट्स	पृष्ठ सं.
5.	एकाधिक काउंटरों के उत्पादों का स्टॉक प्रबंधित करना और उत्पादों का सुरक्षा सुनिश्चित करना (G&J/N6804)	97
	यूनिट 5.1 – काउंटर पर स्टॉक का प्रबंधन	99
	यूनिट 5.2 – उत्पाद की सुरक्षा	102
	यूनिट 5.3 – चोरी के कारण माल में कमी	103
6.	अन्य विभागों के साथ समन्वय स्थापित करना (G&J/N6805)	107
	यूनिट 6.1 – अन्य विभागों के साथ समन्वय स्थापित करने में ज्वैलरी रिटेल सेल्स एसोसिएट की भूमिका	109
7.	अपनी और संगठन की पेशेवर छवि बनाएं (G&J/N6806)	111
	यूनिट 7.1 – संगठन की पेशेवर छवि बनाना	113
	यूनिट 7.2 – अपनी पेशेवर छवि बनाना	115
8.	कार्यस्थल पर स्वास्थ्य एवं सुरक्षा बनाए रखना (G&J/N9902)	117
	यूनिट 8.1 – दुर्घटनाओं के संभावित स्रोतों को समझना	119
	यूनिट 8.2 – सुरक्षित रहने के लिए सुरक्षा संकेतों एवं उपयुक्त आवश्यकताओं को समझना	125
	यूनिट 8.3 – श्रमदक्षता शास्त्र (एर्गोनोमिक्स) या गलत आसन को समझना	134
	यूनिट 8.4 – अग्नि सुरक्षा संबंधी नियम	138
	यूनिट 8.5 – आपातकालीन स्थितियों से निपटने के तरीके को समझना	143
9.	नियोजनीयजा एवं उद्यमशिलता कौशल	149
	यूनिट 9.1 – व्यक्तिगत क्षमताएं एवं मूल्य	154
	यूनिट 9.2 – डिजिटल साक्षरताः पुनरावृत्ति	175
	यूनिट 9.3 – धन संबंधी मामले	182
	यूनिट 9.4 – रोजगार व स्वरोजगार के लिए तैयारी करना	194
	यूनिट 9.5 – उद्यमशीलता को समझना	206
	यूनिट 9.6 – उद्यमी बनने की तैयारी करना	240

GJSCI
Gem & Jewellery Skill Council of India

1. परिचय

यूनिट 1.1 – भारतीय आभूषणों का इतिहास
यूनिट 1.2 – भारत के आभूषण उद्योग का अवलोकन
यूनिट 1.3 – ज्वैलरी रिटेल सेल्स एसोसिएट (जेआरएसए) की भूमिका और दायित्व

प्रमुख शिक्षा परिणाम

इस मॉड्यूल के अंत में, आप निम्नलिखित सक्षम हो जाएंगे:

1. भारतीय आभूषणों के इतिहास और प्रतीकात्मकता को जानने और समझने में
2. ज्वैलरी वैल्यू चेन के खनन से उपभोग तक के मूल तत्वों को जानने और समझने में
3. विभिन्न रिटेल प्रारूपों को जानने और समझने में
4. भारत में सोने के उपभोग को और उपभोग पैटर्न में आए बदलावों के कारणों को जानने में
5. आभूषणों के लागत निर्धारण, सोने और सोने के आभूषणों के दाम को समझने में
6. आभूषणों के सकल वजन और शुद्ध वजन को जानने और समझने में
7. हॉलमार्किंग को जानने और समझने में
8. मेटल परखने के तरीके को जानने और समझने में
9. ज्वैलरी रिटेल सेल्स एसोसिएट (जेआरएसए) की भूमिका और दायित्व को समझने में

यूनिट 1.1: भारतीय आभूषणों का इतिहास

यूनिट के उद्देश्य

इस यूनिट के अंत में, आप निम्नलिखित सक्षम हो जाएंगे:

1. भारत में आभूषणों के उद्भव को समझने में
2. यह समझने में कि किस प्रकार प्रतीकात्मकता का इस्तेमाल भारतीय आभूषणों में होता है

1.1.1 भारत में आभूषणों का इतिहास

किसी और देश से भिन्न, भारत इस बात पर गर्व कर सकता है कि इस के पास आभूषणों के डिजाइनों की एक निरंतर विरासत है। रामायण और महाभारत के समय से भारतीयों को उनके आभूषणों से लगाव के लिए जाना गया है। भारत के पास डिजाइन और शिल्पकारिता की एक संपन्न विरासत है जो आज भी देखी जा सकती है।

सोने को पहले और आज भी एक पवित्र मेटल माना जाता है – यह देवी लक्ष्मी के भौतिक रुप में माना जाता है, इसलिए, इसे श्रद्धेय, सम्मानित और पूजा जाता है। सोना गर्म सूरज का प्रतिरूप है, जो कि परिणाम स्वरूप जीवन का स्रोत है। खरे सोने को समय के साथ न तो जंग लगता है और न ही इसका क्षय होता है, इसलिए प्राचीन भारतीय लोग सोने को अमरता के साथ संबद्ध करते थे।

आभूषण बनाने वालों में सबसे पहला नाम सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगों का आता है, जो परिष्कृत कान की बालियाँ, हार और चूड़ियाँ बनाते थे। हालांकि, महिलाएं ही सबसे ज्यादा आभूषण पहनती थीं लेकिन प्राचीन भारत में पुरुष भी काफी सारे आभूषण पहनते थे।

जैसे आज होता है, पहले भी, आभूषण पहनने को सामाजिक स्तर के साथ जोड़ा जाता था। लेकिन पहले, आभूषण पहनने के कुछ नियम होते थे जैसे – सिर्फ शाही लोग और उनके परिवार के सदस्य और कुछ और लोग जिनको उन्होंने आभूषण पहनने की अनुमति दी हो, सोने के आभूषण अपने पैरों में पहन सकते थे। आमतौर पर, ऐसा करना सोने जैसे पवित्र मेटल के मूल्यांकन को हानि पहुँचाना माना जाता था क्योंकि सोने को देवी लक्ष्मी के रूप में देखा जाता था। हालांकि, भारतीय जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा आभूषण पहनता था, महाराजाओं और शाही परिवार से जुड़े लोगों का आभूषणों के साथ एक गहरा रिश्ता था।

1.1.2 भारतीय आभूषणों में प्रतीकात्मकता

पारंपरिक भारतीय आभूषण, आभूषण बनाने की प्रक्रिया की उत्कृष्टता और परिपक्व समझ को दर्शाते हैं, जिसमें आभूषण बनाना जैसे कि – डिजाइन बनाना, सोने/चांदी पर काम करना, नक्काशी, मीनाकारी, मेटल पर पॉलिश करना, गढ़ना, और पत्थर सेट करना शामिल हैं – यह सब स्पष्ट रूप से अलग–अलग व्यवसाय हैं जिनमें लंबा प्रशिक्षण और विशिष्टीकरण शामिल हैं।

भारतीय आभूषण के संबंध में मुगल शासनकाल सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण था। जबकि मुगल आभूषण व्यापक रूप से भारतीय आभूषणों का निरूपण करते हैं, द्रविड़ और पूर्व भारतीय आभूषण बनाने की तकनीकें भी अपने प्रस्तुतीकरण में काफी परिष्कृत और प्रतिभाशाली हैं।

पारंपरिक भारतीय आभूषण सिर्फ सजावटी नहीं है। आभूषणों के हर एक आईटम को एक उद्देश्य और अर्थ के साथ बनाया जाता है। पारंपरिक भारतीय आभूषणों में इस्तेमाल किए गए चिन्ह पहनने वाले से देखने वाले की ओर संदेश पहुंचाते हैं।

भारतीय आभूषणों में यह प्रतीकात्मकता भारतीयों के बीच प्रचलित सामान्य सिद्धांतों, चिंताओं, और भीतियों से आती हैं।

सबसे पहला आभूषण तावीज के रूप में पहना जाता था। इसका काम पहनने वाले को बुरी शक्तियों से बचाना, प्रजनन क्षमता को बढ़ाना और बीमारियों से रक्षा करना था। यही कारण है कि हम प्राचीन भारतीय मूर्तियों या गुफाओं के चित्रों में देखते हैं कि उनमें शरीर के विभिन्न अंगों को आभूषणों से विभूषित किया गया है।

टिप्पणियां

यूनिट 1.2: भारत के आभूषण उद्योग का अवलोकन

यूनिट के उद्देश्य

इस यूनिट के अंत में, आप निम्नलिखित सक्षम हो जाएंगे:

1. कीमती मेटल/आभूषणों के प्रति भारतीय दृष्टिकोण को समझने में
2. पूरी ज्वैलरी वैल्यू चैन को समझने में
3. भारत में ज्वैलरी रिटेल सेल्स के विभिन्न प्रारूपों को पहचानने में
4. यह समझने में कि किस प्रकार से भारत में आभूषण का उपभोग/मांग संचालित होती है
5. भारत के आभूषण उपभोग पैटर्न में पारंपरिक बलों और उभरती हुए प्रवृत्तियों की व्याख्या करने में
6. यह समझने में कि किस प्रकार से अंतर्राष्ट्रीय और भारतीय बाजार में सोने की कीमत की गणना की जाती है
7. हर आभूषण के पीछे लगाए गए श्रम शुल्क के तर्क को समझने में
8. सोने की कीमत तय करते समय ध्यान में लिए जाने वाले भागों को जानने में
9. आभूषण की बिक्री पर टैक्स ढाँचे के साथ परिचित होने में
10. सकल वजन और शुद्ध वजन के सिद्धांतों का स्पष्टीकरण करने में
11. आभूषण खरीद के रसीद के भागों का वर्णन करने में
12. हॉलमार्किंग का अर्थ और महत्व को समझने में
13. मेटल के अर्थ को और विभिन्न उपलब्ध पद्धतियों को समझने में

1.2.1 आभूषणों के प्रति भारतीय मानसिकता

भारत में सोने के उपभोग के विशिष्ट कारण इस प्रकार हैं:

- संपत्ति भी और निवेश भी।
- मानसिक सुरक्षा प्रदान करता है और साथ ही मुश्किल समय का सहारा है।
- सामाजिक स्थिति से जुड़ा है।
- एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दिया जाता है। आभूषण माता से बेटी को सौंपें जाते हैं।
- स्त्रीधन – दुल्हन को भेंट में दिए गए सोने को "स्त्रीधन" कहते हैं और उसके नए घर में यह पूरी तरह से उसकी संपत्ति होती है।
- तरल परिसंपत्ति – दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं जैसे कि पति की मृत्यु या अल्प फसल के कारण सूखे स्थिति में, सोना, परिवार को कुछ सुरक्षा प्रदान करता है।
- फसल खरीदने में।
- स्वयं के श्रृंगार के लिए।
- त्यौहार – जन्मदिन, सालगिरह, उत्सव (अक्षय तृतीया, धनतेरस, दशहरा, आदि)।

1.2.2 ज्वैलरी वैल्यू चेन

सोना एक प्राकृतिक खनिज है। यह कारखानों में बनाया नहीं जाता है। खान पृथ्वी की परत पर एक जमाव होती है जिसे अत्यधिक परिष्कृत प्रक्रियाओं के द्वारा खनिज को खोद कर निकाला जाता है।

गोल्ड पैनिंग

गोल्ड पैनिंग हाथों के प्रयोग से सोने को छाँटने की प्रक्रिया है जो की अब लगभग अप्रचलित है।

चौड़ी, कम गहराई वाले तसलों में रेत और बजरी भरी जाती है जिसमे सोना हो सकता है। पानी डाल कर पतीलों को हिलाया जाता है जिससे सोना, बजरी और अन्य सामग्री से छांटा जाता है।

चूँकि सोना पत्थर से ज्यादा गाढ़ा होता है, यह जल्द ही पतीले के तल में जमा हो जाता है। गाद को आम तौर पर धारा की तल से, अक्सर धारा के किसी मोड़ पर, या धारा के आधार पर से, जहाँ सोने का गाढ़ापन उसे पानी के बहाव से अलग कर देता है, निकाल दिया जाता है।

आकृति 1.2.2.1 गोल्ड पैनिंग

इस तरह के सोने को जो धाराओं या सूखी धाराओं में पाया जाता है, उसे प्लेसर डिपाजिट कहते हैं।

गोल्ड पैनिंग, सोना खोजने की सबसे सरल तकनीक है, लेकिन यह व्यावसायिक रूप से बड़े भंडारों से सोना निष्कर्षण में साध्य नहीं है।

बंद सोने की खदानों का प्रचार अक्सर पर्यटन आकर्षण के रूप में किया जाता है।

खनन

खदान दो प्रकार के होते हैं, खुले गड्ढे और भूमिगत, प्रत्येक को अयस्क पाए जाने वाले स्थान की परिस्थितियों के साथ सही बिठाने के लिए विकसित किया जाता है।

खनन की प्रक्रिया को 6 भागों में बांटा जा सकता है:

- अयस्क की खोज करना।
- अयस्क तक पहुँच का निर्माण करना।
- खनन के द्वारा या अयस्क पिंड को तोड़ कर अयस्क का निष्कासन करना।
- उपचार के लिए खनन क्षेत्र से कारखानों तक टूटे हुए माल का परिवहन करना।
- प्रसंस्करण
- परिष्करण

खनन के प्रकार – खुले गड्ढे

खुले गड्ढे खनन एक तरह की सतही खनन है और यह सतह के नजदीक अत्यधिक मात्रा के भंडारों के लिए उपयुक्त है। ब्लास्टहोल ड्रिल सुराखों को विस्फोटकों से भर दिया जाता है और विस्फोट करके चट्टानों को हटाया जाता है। विस्फोट के बाद, टूटे हुए चट्टानों को भूवैज्ञानिकों द्वारा अयस्क या अपशिष्ट के रूप में चिन्हित किया जाता है। अवशिष्ट अपशिष्ट चट्टानों को आम तौर पर भूमि को भरने या भूनिर्माण परियोजनाओं में प्रयोग किया जाता है।
हाल के वर्षों में खुले गड्ढे खनन एक पसंदीदा खनन तरीका बन गया है।

आकृति 1.2.2.2 खुले गड्ढे खनन

भूमिगत खनन/शाफ्ट खनन

भूमिगत खनन/शाफ्ट खनन में अयस्क भंडारों में सुराख कर उनमें विस्फोटक भर कर विस्फोट किया जाता है। विस्फोट किए गए "स्टोप्स" या "फेसेस" को साफ करके खदानों से परिवहन किया जाता है।

आकृति 1.2.2.3 भूमिगत खनन/शाफ्ट खनन

प्रसंस्करण

- सायनाइड विधि सोने को कम ग्रेड के अयस्क से निकालने की सबसे प्रचलित विधि है।
- सायनाइड विधि में एक कड़ाई से नियंत्रित क्षारीय साइनाइड नमकीन पानी में अयस्क की लीचिंग शामिल है जिसके बाद सोने को फिर से घोला जाता है और बाद में अयस्क टिक्कियों में गला कर रिफाइनरी में भेज दिया जाता है।

परिष्करण

सोने की बार्स की शुद्धता को शुद्ध सोने की तरह बनाने के लिए और ज़्यादा परिष्करण कर बुलियन बार्स का रूप दिया जाता है। इनको 'गुड डिलीवरी स्टेटस' दिया जाता है, जो कि गुणवत्ता का अंतर्राष्ट्रीय मानक है, और यह आश्वासन देता है कि इन बार्स में वही मात्रा और शुद्धता है जिसकी मुहर इन पर लगाई गयी है।

आकृति 1.2.2.4 परिष्करण

1.2.3 भारतीय सोना आपूर्ति श्रृंखला

भारत में अधिकांश सोना आयात किया जाता है। अन्य तरह की आपूर्ति में पुनर्नवीनीकृत सोना शामिल है। पुनर्नवीनीकृत सोना उसे कहते हैं जिसे ग्राहक जौहरियों, साहूकारों, वित्त कंपनियों, आदि को बेचते है। उसके बाद इस सोने को परिष्कृत और पुनर्नवीनीकृत कर निवेश या फुटकर व्यवसाय में प्रयोग किया जाता है।

- **भारत में 4,00,000 ज्वैलरी रिटेल आउटलेट हैं।**